भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष 11, अंक-9 रविवार, 25 सितं. '88	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मानद् सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

कोटि वंदन संत 'गुणातीत' को.....

शरद्पूर्णिमा... अर्थात् अक्षरब्रह्म मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के पृथ्वी पर अवतरित होने का महामंगलकारी दिन... अगर किसी को गुणातीत भाव में रहने की ज्वलंत इच्छा है, तो सर्वप्रथम तत्व से 'अक्षर' को पहचानना आवश्यक है। जब तत्त्व से 'अक्षर' की महिमा समझ में आयेगी तब ही अक्षर से परे और अक्षर के आधार पूर्ण पुरुषोत्तम का महिमा समझ पायेंगे। परन्तु अक्षर की उपेक्षा करके पुरुषोत्तम (महाराज) की महिमा समझने की अगर कोई चेष्टा करेगा तो खाली हाथ ही रह जायेगा; क्योंकि अक्षर ही पुरुषोत्तम को पाने का मोक्षद्वार है।

स्वामिनारायण संप्रदाय की युगल उपासना अर्थात 'अक्षर-पुरुषोत्तम'...! अक्षर के बिना पुरुषोत्तम का आविर्भाव संभव ही नहीं... ऐसा स्वंय महाराज ने कहा है। इसलिये ही श्रीजी महाराज जीवों का कल्याण करने हेतु पृथ्वी पर स्वंय का धामरूप मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी सहित पृथ्वी पर प्रगट हुए व पृथ्वी पर सर्वदा के लिए 'गुणातीतसंत' की सेरे छाया अखंडित रहे ऐसी एक आत्यंतिक कल्याण योजना निश्चित कर दी ! 'पुरुषोत्तम' (श्रीजी महाराज) को अगर पाना है तो 'अक्षर' (मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी) का माध्यम अनिवार्य है। जीव की क्या ताकत कि वह अनंत सूर्यों के प्रकाश को भी फीका करने वाले अनादि पुरुषोत्तमनारायण के स्वरुप को पहचान सके। इसलिए स्वंय 'अक्षर' ने पुरुषोत्तम के प्रति ऐसी अनिर्वचनीय, अजोड़ पराभक्ति अदा की कि युगों-युगों तक वह मानवचेतना को अद्भुत मार्गदर्शन देती रहेगी व मानवजाति कभी भी इस परम कल्याणकारी विभूति का ऋण भुला नहीं पायेगी। आओ, हम सब इस पुनीत पवित्र गंगा में स्नान करके गुणातीतानंदस्वामी के दिव्य चरित्रों, प्रसंगों को याद करके–अपने जीवन में साकार करके स्वयं को धन्य कर लें।

संवत् 1871 की साल में महाराज वड़ताल में पधारे थे और वहां से उन्हें गढ़डा जाना था। महाराज के साथ लगभग डेढ़ सौ साधु थे। उस वर्ष दुकाल पड़ रहा था। इसलिये 'इतना बड़ा संघ लेकर रास्ते में भिक्षा माँगने जाना व हरिभक्तों को

बोझरूप बनना यह जायज नहीं'—यूं सोचकर महाराज ने साधुओं को कहाः 'तुम तुम्हारे में से किसी एक को मुखिया बनाकर उसकी आज्ञानुसार तुम तुम्हारा सारा बन्दोबस्त करो।' इन संतों को तो महाराज के भगवान होने का अटल निश्चय था, इसलिये संतों ने हाथ जोड़कर कहा : 'महाराज ! आप कहो उसे ही मुखिया माने'। तब महाराज ने कहा : 'यह गुणातीतानंदस्वामी को चुनो।' यह सुनकर एक साधु ने स्वयं की व्यावहारिक प्रकृति के अनुसार शंका करके कहा महाराज ! यह साधु तो सिर्फ आपकी मूर्ति को अखंड धार करके रहता है, इसलिए व्यवहार में तो जरा भी अधिक जानता नहीं, रुपया-कोड़ी में समझता नहीं, सेर-दो सेर को समझता नहीं, यह तो बिना कुंडी लगाये दरवाजे पर ताला मारकर रखे उनमें से है।'

तब महाराज ने हंसकर रहस्यपूर्ण वाक्य कहाः **'यह तुम्हें आगे जाकर पता चलेगा।'** बाद में सब संतों ने गुणातीतानंदस्वामी को मुखिया बनाये।

स्वामिश्री में अति उत्तम योजनाशक्ति थी। उन्होंने तुरंत ही अपने व्यवहारकुशल होने का परिचय दिया। उन्होंने डेढ़ सौ साधुओं में से दस-दस के मंडल बना दिये। उन दस-दस में से एक को बड़ा बनाकर सभी मंडलों को अलग-अलग रास्तों से अलग-अलग गांवों में घूमते-घूमते एक जगह गढ़डा आने की आज्ञा करी। इससे दस-दस साधु के मंडल को गाँवों में भिक्षा भी बराबर मिलती रहे और किसी को भाररूप भी न बने ! इस प्रकार प्रवास से दौरान संतों के निर्वाह की उत्तम व्यवस्था स्वामिश्री ने कर दी व डेढ़ सौ संतों का संघ निर्विघ्न गढ़डा पहुंच गया। स्वामिश्री की योजना शक्ति को देखकर महाराज खूब राजी हो गये।

हम इस छोटे से प्रसंग को निहारें कि जो साधु सारे ब्रह्मांड का व्यवहार बिना किसी को थोड़ा भी इशारा दिए कुशलता से संभाल सकता है वह इस लोक के सामान्य व्यवहार को कितना अधिक संभाल सकता होगा? पर, हमारा मायिकभाव हमें उन्हें तत्त्व से समझने नहीं देता।

स्वामिश्री एक उत्तम उपदेशक थे। उनके उपदेश की शैली सचोट व बेधड़क थी। जो भी उनकी बातें सुनता उनके हृदय पर उनकी अमिट छाप पड़ जाती। अन्य संम्प्रदायों के अनुयायी भी स्वामिश्री के उपदेश सुनकर कृतार्थ होते थे। स्वयं के इष्टदेव (महाराज) की अपार महिमा, इष्टदेव के प्रति की पराभक्ति सिद्ध करने में अनिवार्य ऐसे धर्म, ज्ञान और वैराग्य संस्कार की आवश्यकता वगैरा का उत्कृष्ट प्रवाह गंगा के अविरत स्रोत की भांति स्वामिश्री के मुख में से बहता ही रहता। व्यवहार की उपेक्षा किये बिना उसे स्वाभाविक बनाकर, व्यावहारिक प्रवृत्तियां भी किस प्रकार भक्तिमय बना देनी, वैसी उनकी बातें सुनकर व्यवहार निपुण विद्वानों, ज्ञाता आश्चर्यचकित रह जाते। कोई प्रवृत्ति न हो तब स्वामिश्री स्वयं ध्यान मग्न रहते।

एक बार महाराज गढ़डा में विराजमान थे। साधु संतों की मंडली सामने बैठी थी। सभा में स्वामश्री ने स्वयं महाराज को प्रश्न पूछा :

'1. भगवान का अखंड ध्यान करना,

2. आत्मारूप वर्तना,

3. बीमारों की सेवा करना और

4. बातें करना—'

इन चारों में से कौन सा साधन साधक के लिये श्रेष्ठ है? श्रीजी महाराज ने यह प्रश्न सभा में सर्व संतों को पूछा।

किसी ने कहा-'ध्यान।' किसी ने कहा-'ज्ञान।' तो किसी ने कहा : 'सेवा।' हरेक ने अपने-अपने ढंग से उत्तर दिया पर किसी का भी सही उत्तर

आया नहीं। तब आखिर में महाराज ने सद्. मुक्तानंदस्वामी को बुलाकर यह प्रश्न पूछा। तो सद्. मुक्तानंदस्वामी ने उत्तर दिया। 'महाराज, मुझे तो ध्यान श्रेष्ठ लगता है।' फिर महाराज ने स्वयं इस प्रश्न का उत्तर करते हुए कहा कि-'सुनो संतों ! इन चार में प्रथम के तीन साधन तो मुमुक्षु के स्वयं के कल्याण के लिये हैं। परन्तु बातें करना व उपदेश करना–वह स्वयं व दूसरों–दोनों के कल्याण के लिये है। महाराज ने स्वयं का उदाहरण देकर बताया कि देखो, हम तप करते हुए यहां अकेले ही आये थे और जब सद्. रामानन्दस्वामी ने हमें यह सत्संग सौंपा तब सत्संग बहुत छोटा था और अब इतना अधिक सत्संग का विस्तार हो गया है। यह सब बातों व उपदेश का ही प्रभाव है। और अभी तो सत्संग का प्रसार खूब बढ़ेगा क्योंकि कोटि-कोटि जीवों का कल्याण करना है वह बातों से ही बनेगा।'

सच्चे उपदेशक व उसके उपदेश की छाप जगत कभी भी भूल न सके व स्वयं (महाराज) का इस पृथ्वी पर प्रगट होने के हेतु को लक्ष्य में रखकर संतों को महाराज ने कहा-'हे संतों ! इस पृथ्वी पर मैं तुम्हें अक्षरधाम से साथ लेकर आया हूँ उउका हेतु तो शुद्ध सत्संग की स्थापना करना है और उस प्रकार का सत्संग कराकर अनेक जीवों को अक्षरधाम का अधिकारी बनाना है। पर इतना करने से भी हमारे कार्य की पूर्णाहुति नहीं होगी। हमें तो हमारे जाने के बाद भी इस सत्संग द्वारा ही मुमुक्षुओं के लिये मोक्ष का द्वार सदा के लिये खुला रखना है। हमें तो सत्संग द्वारा एकांतिक धर्म की स्थापना करनी है। अगर हम धर्म पालकर या उपदेश करके भी अन्य मुमुक्षुओं को सत्संग के मार्ग पर न चढ़ावें तो महारा पृथ्वी पर अवतरित होने का फेरा बेकार चला जायेगा। इसलिए आज से हमारी सबको आज्ञा है कि हमारे आश्रित त्यागी, गृहस्थ भाई या बहनें सब-उन्हें जितना सत्संग दृढ़ हुआ हो वैसा दूसरों के साथ हेत करके दृढ़ कराना। जैसा परिश्रम कर सको वैसा परिश्रम करके जीव को प्रभु का आश्रय कराना और ऐसा आश्रय लेकर सत्संग करके जीवों अक्षरधाम के अधिकारी बने ऐसे प्रयास सब करना।' श्रीजी महाराज के इस उत्तर से संतों को महाराज का रहस्य समझ में आया। और स्वामिश्री ने तो तबसे निश्चय ही कर लिया कि **'बातें ही करनी, उसमें कभी भी नागा पड़ने नहीं देना।'** आज भी प्रत्येक सत्संगी के घर में 'स्वामी की बातें' ग्रन्थ खूब महिमा से पढ़ा जाता है। और आश्चर्य की बात है कि करीब 200 साल पहले कही हुई बातें साधक के लिए आज भी खूब लाभदायक सिद्ध होती हैं।

स्वामिश्री की महाराज के प्रति कैसी अप्रतिम प्रीति ! महाराज के वचन की ओर चातक की दृष्टि होगी जो महाराज के मुख से निकली बात उनके जीवन का निशान, ध्येय बन जाती थी।

शरद्पूर्णिमा का परम पवित्र अवसर नजदीक आ रहा है। हम सब स्वामिश्री द्वारा जिये गये पल-पल के आदर्श जीवन से प्रेरणा लें। हम इसी पीढ़ी के पनौते वारिसदार माने जाते हैं। अगर जगत में भी किसी लड़के को यह पता चल जाये कि मेरे पूर्वज खूब खानदानी थे–मैं एक खानदानी परिवार का लड़का हूँ तो वह अपना वर्तन बदलना शुरु कर देता है। तो हमारे वर्तन से इनकी प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ती रहे.....ऐसे सजग होकर गुणातीत संत में अपने अस्तित्व को भूलाकर पल-पल की भक्तिरूप क्रिया करें–यही शरद्पूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रार्थना !

o o o

स्वामी की बातें

111. गाय बछड़े की मां कही जाती है, परन्तु बछड़े को दूध का सुख तो उसके थन से ही आयेगा, दूसरे किसी अंग से नहीं। उसी प्रकार भक्ति तो कई कही जाती है, परन्तु सच्चा सुख तो जैसा भगवान की मूर्ति में से आयेगा वैसा और कहीं से नहीं आयेगा।

प्र.2,150

112. जीव (प्रारब्धवश) कर्म वश होकर दुःख सहन करता है वैसे अपने कल्याण के लिये नहीं करता। वैसे अपने कल्याण के लिये नहीं करता। बिच्छू ने काटा हो तो सारी रात जागेगा (किन्तु भगवान के भजन के लिये नहीं !) इस प्रकार कई बातें है।

प्र. 2, 152

113. कितना ही उत्तम स्थान हो वहां जाकर रहे, तो भी जीव वृद्धि को नहीं पायेगा। वह तो संत के संग से शक्य है, पर उसके बिना नहीं हो सकता।

प्र-2,153

114. महाराज ने कहा था कि संकट के समय हरी दूब (घास) को दंडवत् करना। इसमें रहकर मैं सहाय करूँगा।

प्र-2, 155

115. सत्संग से गिर न जायें, इस हेतु महाराज ने कहा है—यदि सब साधु-सत्संगियों के साथ जी जोड़ दें तो नहीं गिरेंगे। यूं कहकर कम करते-करते आखिरकार कहा कि दो अच्छे साधु और चार सत्संगी के साथ भी यदि जी जोड़ लिया हो तो नहीं गिरेंगे। वरन् देशकाल विपरीत होने पर गिर सकते हैं।

प्र-2, 157

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	5.10.88	बुधवार	श्रीजी महाराज का श्राद्ध
2.	दि.	6.10.88	गुरुवार	एकादशी, व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का श्राद्ध
3.	दि.	7.10.88	शुक्रवार	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का श्राद्ध
4.	दि.	8.10.88	शनिवार	मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामीजी का व ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का श्राद्ध
5.	दि.	19.10.88	बुधवार	नवमी, नवरात्रे प्रारंभ
6.	दि.	20.10.88	गुरुवार	विजयादशमी, दशहरा
7.	दि.	21.10.88	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
8.	दि.	24.10.88	सोमवार	मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी का प्राकट्य दिन व प्र.ब्र.स्व.हरिप्रसादस्वामीजी का दीक्षा दिन
9.	दि.	25.10.88	मंगलवार	शरद्पूर्णिमा

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7128838, 7229327
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110 032